

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Monday, 19 October 2026

मंजुळा हिरेमठ : 'कृष्णा लैंडस्केपर्स' के माध्यम से प्रकृति संरक्षण और हरियाली बढ़ाने की पहल

Sanket Morankar

Published on 18 Oct 2026



प्रकृति के प्रति प्रेम से पर्यावरण संरक्षण तक का सफर

प्रकृति की देखभाल करना और हरियाली बढ़ाना केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के बेहतर भविष्य से जुड़ा महत्वपूर्ण प्रयास है। इसी सोच के साथ पुणे की मंजुळा आर. हिरेमठ 'कृष्णा लैंडस्केपर्स' के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य कर रही हैं। उद्यानों की देखभाल, वृक्षारोपण, जल संरक्षण और जैविक खाद निर्माण जैसे विभिन्न प्रयासों के जरिए वे प्रकृति के महत्व को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करती हैं।

उनकी कार्यशैली में उद्यानों को सुंदर बनाए रखने के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल तरीकों को अपनाने पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

'कृष्णा लैंडस्केपर्स' के माध्यम से हरियाली का विस्तार

'कृष्णा लैंडस्केपर्स' आईटी कंपनियों, निर्माण व्यवसायियों, आवासीय परिसरों, हवाई अड्डों और स्कूलों के लिए उद्यान निर्माण एवं रखरखाव की सेवाएं प्रदान करता है। संस्था में 100 से अधिक माली कार्यरत हैं और पुणे शहर के आसपास लगभग 200 एकड़ क्षेत्र में फैले उद्यानों की देखभाल की जाती है।

बड़े और छोटे परिसरों में हरियाली बनाए रखने के साथ-साथ स्वच्छता और पर्यावरण-अनुकूल कार्यप्रणाली को महत्व दिया जाता है। इस तरह संस्था की गतिविधियां उद्यानों के रखरखाव से आगे बढ़कर हरित वातावरण को प्रोत्साहित करने की दिशा में भी योगदान देती हैं।

जल संरक्षण और जैविक खाद निर्माण पर जोर

मंजुळा हिरेमठ वृक्षारोपण के साथ पानी की बचत और जैविक कचरे के उचित उपयोग को भी महत्वपूर्ण मानती हैं। बगीचों से

निकलने वाले सूखे पत्तों और अन्य जैविक कचरे से खाद तैयार करना तथा केंचुओं की सहायता से मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने को प्रोत्साहित करना उनके प्रयासों का हिस्सा है।

वे रो-हाउस और आवासीय परिसरों में रहने वाले लोगों को छत या उपलब्ध खुली जगह पर जैविक सब्जियां उगाने के बारे में भी मार्गदर्शन देती हैं। इसका उद्देश्य लोगों को अपने आसपास की जगह का बेहतर उपयोग करने और प्रकृति के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करना है।

मियावाकी गार्डन से प्रकृति के करीब लाने की पहल

मंजुळा हिरेमठ वर्तमान में मियावाकी गार्डन की अवधारणा को प्रोत्साहित कर रही हैं। इस पहल के माध्यम से आवासीय क्षेत्रों के आसपास घनी हरियाली विकसित करने और पक्षियों तथा छोटे जीवों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

उनकी इच्छा है कि बच्चे प्रकृति को केवल किताबों या तस्वीरों में देखने के बजाय अपने आसपास पक्षियों और अन्य जीवों को देखकर उनके बारे में जान सकें। इसके साथ ही, वन्यजीवों के लिए अनुकूल वातावरण बनाए रखने और संरक्षित वन क्षेत्रों में प्राकृतिक संतुलन के महत्व को भी वे रेखांकित करती हैं।

किसानों के बीच जैविक खाद के प्रति जागरूकता

मिट्टी का स्वास्थ्य बनाए रखना और रासायनिक खादों के उपयोग को कम करने के विकल्पों पर विचार करना भी मंजुळा हिरेमठ के पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे किसानों के बीच जैविक खाद को प्राथमिकता देने के प्रति जागरूकता बढ़ाना चाहती हैं।

उनके अनुसार, मिट्टी की गुणवत्ता, पानी का संरक्षण और पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना आज की महत्वपूर्ण जरूरतें हैं। जैविक कचरे का सही उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जिम्मेदार व्यवहार इन उद्देश्यों की दिशा में उपयोगी कदम हो सकते हैं।

सुंदर उद्यानों से आगे, प्रकृति से जुड़ा जीवन

‘कृष्णा लैंडस्केपर्स’ के माध्यम से मंजुळा हिरेमठ का प्रयास केवल उद्यानों को सुंदर बनाए रखने तक सीमित नहीं है। वे हरियाली बढ़ाने, जैविक कचरे का उपयोग करने, जल संरक्षण को प्रोत्साहित करने और बच्चों में प्रकृति के प्रति रुचि विकसित करने जैसे विषयों को भी महत्व देती हैं।

उनकी पहल इस विचार को आगे बढ़ाती है कि पर्यावरण संरक्षण केवल किसी एक संस्था या व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के सामूहिक प्रयासों से जुड़ा कार्य है।

मंजुळा आर. हिरेमठ और ‘कृष्णा लैंडस्केपर्स’ का कार्य उद्यानों के रखरखाव के साथ पर्यावरण-अनुकूल तरीकों को अपनाने के महत्व को सामने लाता है। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, जैविक खाद निर्माण, मियावाकी गार्डन और प्रकृति के प्रति जागरूकता जैसे प्रयासों के माध्यम से वे हरित वातावरण को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य कर रही हैं। उनका दृष्टिकोण यह संदेश देता है कि प्रकृति की देखभाल, संसाधनों का जिम्मेदार उपयोग और अगली पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना, बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक है।